



राजकीय महाविद्यालय, अहङ्कारा (बिलासपुर)

यमुना नगर

(एफिलिएटेड टू कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी, कुरुक्षेत्र)



महाविद्यालय के आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC)
के तत्वावधान में

**“सिख गुरु परंपरा: हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत”
विषय पर**

दिनांक: 29 जनवरी, 2026 को

उच्चतर शिक्षा निदेशालय, हरियाणा द्वारा प्रायोजित
एक दिवसीय बहुविषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी
का आयोजन कर रहा है

महाविद्यालय बारे:

राजकीय महाविद्यालय, अहङ्कारा (बिलासपुर) की स्थापना 2018 में हुई थी और यह हिमालय की शिवालिक पर्वत श्रृंखला की तलहटी में स्थित है। यह यमुनानगर जिले के कपाल मोर्चन के अहङ्कारा गांव में स्थित है। महाविद्यालय परिसर 8.5 एकड़ में फैला हुआ है और हरे-भरे क्षेत्र, सुंदर सड़कों और प्रसिद्ध गुरु गोविंद सिंह मार्शल आर्ट संग्रहालय से घिरा हुआ है। यह सरस्वती नदी के निकट स्थित पवित्र स्थान 'कपाल मोर्चन' में स्थित है, जो एक प्राचीन तीर्थस्थल है। कपाल मोर्चन को गोपाल मोर्चन के नाम से भी जाना जाता है। यह जगधरी से लगभग 17 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित है। पुराणों में कपाल मोर्चन का उल्लेख सोमसर तीर्थ के रूप में मिलता है। महाभारत और पुराणों में इसके अनेक स्थानों पर उल्लेख से इसका महत्व स्पष्ट होता है। कपाल मोर्चन को तीनों पौराणिक लोकों में प्रसिद्ध बताया गया है। यह सभी पापों का नाश करने वाला स्थान है। भक्त पवित्र सरोवरों में स्नान करके पापों से मुक्ति पाते हैं। भंगानी के युद्ध के बाद श्री गुरु गोविंद सिंह ने भी पांवटा साहिब जाते समय इस स्थान का दौरा किया था। गुरु जी ने यहाँ पर 52 दिनों तक रह कर तपस्या की। उनके सैनिकों ने अपने हथियारों की सफाई की और भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए उनका परीक्षण किया। उन्होंने कपाल मोर्चन के मुख्य पुजारी को स्मृति चिन्ह के रूप में अपने हस्ताक्षर वाला एक ताम्र पत्र भेंट किया। द्रौपदी और पांचों पांडवों ने भी इस पवित्र स्थान का दर्शन किया था। यह क्षेत्र पुरातात्त्विक और ऐतिहासिक स्थलों से समृद्ध है, जैसे आदिबद्धी, लोहगढ़, बिलासपुर, सन्धाय, साठौरा, छछरौती, चनेटी आदि। यह महाविद्यालय कला, वाणिज्य और विज्ञान के क्षेत्रों में उच्च शिक्षा प्रदान करता है और विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित करता है, जैसे बी.ए., बी.कॉम., बी.कॉम.(कंप्यूटर एप्लिकेशन्स वोकेशनल), बी.सी.ए., बी.एससी.(फिजिकल साइंस), बी.एससी.(लाइफ साइंस), एवं एम.कॉम।

उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा बारे:

उच्चतर शिक्षा विभाग, हरियाणा राज्य में उच्च शिक्षा प्रदान करता है और उसका नियंत्रण करता है। शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करने के साथ-साथ, यह शोधार्थीयों को शिक्षण-अधिगम और मार्गदर्शन प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है ताकि शोध की संस्कृति को स्थापित और सतत रखा जा सके। यह संस्थानों को उच्चतम स्तर की मान्यता प्राप्त करने के लिए सुविधाएं प्रदान करके उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने को प्रयासरत है। यह 10 राज्य विश्वविद्यालयों, 25 निजी विश्वविद्यालयों, 4 अन्य विश्वविद्यालयों, 186 सरकारी कॉलेजों, 96 सहायता प्राप्त कॉलेजों, 94 निजी कॉलेजों, 475 स्व-वित्तपोषित बी.एड. कॉलेजों, 20 राज्य/जिला पुस्तकालयों, 6 उप-मंडल पुस्तकालयों और 22 एनसीसी इकाइयों/बटालियनों का संचालन करता है।

संगोष्ठी बारे:

ऋषियों, मुनियों, संतों और गुरुओं ने राष्ट्र निर्माण और भारतवर्ष के सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और अर्थीक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज के समय में, गुरुओं, विशेष रूप से सिख गुरुओं की भूमिका और धर्म के लिए उनके बलिदानों को समझना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सिखों के नौरे गुरु, श्री तेग बहादुर जी, धार्मिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों की रक्षा के लिए किए गए अपने सर्वोच्च बलिदान के कारण भारत और मानवता के रक्षक के रूप में पूजनीय हैं। एक ऐसे विश्व में जहाँ असहिष्णुता और उत्पीड़न आज भी मौजूद है, गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान आस्था और पूजा की स्वतंत्रता के अधिकार की रक्षा का एक सशक्त उदाहरण है। उनका जीवन न्याय और मानवाधिकारों के लिए खड़े होने के महत्व को सिखाता है और व्यक्तियों को उत्पीड़न के सामने साहस और निस्वार्थता के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करता है। श्री गुरु तेग बहादुर की धर्मपरायणता समकालीन सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत चुनौतियों के लिए प्रासंगिक नैतिक नेतृत्व और सत्यनिष्ठा की शिक्षा प्रदान करती है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य श्री गुरु तेग बहादुर की शिक्षाओं और जीवन दर्शन का अन्वेषण और प्रसार करना है, जिसमें उनके मानवीय मूल्यों और धर्म के लिए बलिदान के संदेश पर विशेष बल दिया गया है। संगोष्ठी का विषय "सिख गुरु परंपरा: हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत" विषय पर आयोजित सेमिनार के उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- श्री गुरु तेग बहादुर जी के जीवन, शिक्षाओं और आध्यात्मिक विरासत की व्यापक समझ प्रदान करना।
- धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए श्री गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान के ऐतिहासिक संदर्भ और महत्व को उजागर करना।
- मुगलों के अत्याचार और उत्पीड़न के विरुद्ध खड़े होकर श्री गुरु तेग बहादुर जी द्वारा प्रदर्शित साहस, निस्वार्थता और प्रतिबद्धता के मूल्यों का अन्वेषण करना।
- संगोष्ठी में उपस्थित लोगों को श्री गुरु तेग बहादुर जी द्वारा प्रतिपादित सहिष्णुता, त्याग और मानवाधिकारों के सिद्धांतों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित करना।
- एक विविध समाज में धार्मिक सद्भाव और सहअस्तित्व के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना।
- सिख धर्म और भारतीय इतिहास में श्री गुरु तेग बहादुर जी के योगदान पर अकादमिक चर्चा और शोध को प्रोत्साहित करना।
- सिख गुरुओं के जीवन से उदाहरण लेकर युवाओं में नैतिक और सामाजिक मूल्यों का संचार करना।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

पूर्ण शोधपत्र जमा करने की अंतिम तिथि	: 20 जनवरी, 2026
स्वीकृति की अंतिम तिथि	: 24 जनवरी, 2026
राष्ट्रीय संगोष्ठी की तिथि	: 29 जनवरी, 2026

संगोष्ठी का विषय

सिख गुरु परंपरा: हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत

"सिख गुरु परंपरा: हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत" विषय पर संगोष्ठी आयोजित करने का उद्देश्य आम जनता, विशेषकर छात्रों को सिख गुरु परंपराओं, शिक्षाओं और हिंद की चादर श्री गुरु तेग बहादुर जी की शहादत के बारे में जागरूक करना और शिक्षाविदों, विशेषज्ञों, प्रख्यात विद्वानों और छात्रों को निम्नलिखित विषयों पर अपने विचारों, ज्ञान और शोध अनुभवों का आदान-प्रदान करने के लिए एक साँझा मंच प्रदान करना है:

उप-विषय

- सिख गुरु परंपरा
- सिख गुरुओं और उनकी शिक्षाओं का संक्षिप्त परिचय
- आध्यात्मिक और सामाजिक सुधार में सिख गुरुओं की भूमिका
- मीरी-पीरी
- श्री गुरु अर्जन देव जी की शहादत
- श्री गुरु तेग बहादुर का जीवन और उनकी आध्यात्मिक यात्रा
- समाज में सिख धर्म का योगदान
- मुगल शासन के दौरान धार्मिक उत्पीड़न एवं कश्मीरी हिंदुओं की दुर्दशा
- धार्मिक स्वतंत्रता के लिए गुरु तेग बहादुर का संघर्ष
- श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत: घटनाएँ और महत्व
- श्री गुरु तेग बहादुर की गिरफ्तारी और मुकदमा
- मक्खन शाह लबाना
- खुशाल सिंह दहिया
- श्री गुरु तेग बहादुर की विरासत
- भारतीय स्वतंत्रता और मानवाधिकार आंदोलनों पर सिख गुरुओं का प्रभाव
- शीर्षक "हिन्द की चादर" और उसका प्रतीकवाद

- श्री गुरु तेग बहादुर की शहादत की समकालीन प्रासंगिकता
- आज के सन्दर्भ में श्री गुरु तेग बहादुर जी का संदेश
- लक्खी शाह बंजारा
- पंज प्यारे
- खालसा का संगठन
- चार साहिबजादे
- बंदा सिंह बहादुर
- सोशल मीडिया और सिख गुरुओं की शिक्षाएँ
- सिख धर्म में आर्थिक सुचिता: श्री गुरु तेग बहादुर जी की शिक्षाएँ
- सामाजिक-आर्थिक अधिकारों की रक्षा में श्री गुरु तेग बहादुर जी की भूमिका
- सिख मूल्यों के माध्यम से कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर)
- ईमानदार श्रम (किरत-करणी) और आधुनिक वाणिज्य के लिए इसकी प्रासंगिकता।
- वाणिज्य में नैतिकता: श्री गुरु तेग बहादुर जी की अंतर्दृष्टि
- व्यापार में नैतिकता: श्री गुरु तेग बहादुर से सीख
- मुख्य विषय से संबंधित कोई अन्य उप-विषय

पंजीकरण विवरण:

- संगोष्ठी का आयोजन ऑफलाइन मोड में किया जाएगा।
- शोधपत्र की स्वीकृति ब्लाइंड पीयर रिव्यू के अधीन होगी।
- भागीदारी के लिए पंजीकरण अनिवार्य है।
- पंजीकरण शुल्क मौके पर ही नकद में लिया जाएगा और यह अप्रतिदेय होगा।
- प्रमाण पत्र केवल विधिवत पंजीकृत प्रतिभागियों को ही जारी किया जाएगा।
- पंजीकरण शुल्क निम्नानुसार होगा:-
 - ₹200/- (शिक्षाविद/पेशेवर)
 - ₹100/- (छात्र/शोधार्थी)

लेखक/लेखकों के लिए दिशानिर्देश:

दिए गए उप-विषयों या विषय से संबंधित किसी अन्य विषय पर आधारित मौलिक और अप्रकाशित शोध पत्र निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अनुसार आमंत्रित हैं और स्वीकृत पत्रों को सेमिनार में लेखकों में से किसी एक द्वारा प्रस्तुत किया जाएगा।

- सार (शीर्षक सहित) 200 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए (लेखक/प्रस्तुतकर्ता का पूरा विवरण सहित)।
- पूर्ण शोध पत्र 1500 से 2500 शब्दों के बीच होना चाहिए।
- पूर्ण शोध पत्र Times New Roman (अंग्रेजी के लिए), Mangal (हिंदी के लिए), Gurmukhi (पंजाबी के लिए) फॉन्ट में 12 फॉन्ट साइज और 1.5 लाइन स्पेसिंग के साथ टाइप किया जाना चाहिए, शीर्षक Bold होना चाहिए, और A4 साइज के पेपर पर होना चाहिए। इसमें लेखक/लेखकों का नाम, आधिकारिक पता और ईमेल शामिल होना चाहिए।
- साहित्यिक चोरी से मुक्त सार/शोध पत्र प्रस्तुत करना लेखकों की एकमात्र जिम्मेदारी होगी।
- उच्च स्तरीय शोध पत्रों को संभवतः आने वाले महीनों में ISBN के साथ एक पुस्तक में प्रकाशित किया जाएगा,
- सार/शोध पत्र जमा करने के लिए ईमेल आईडी: seminar26gcab@gmail.com

आयोजन टीम

मुख्य संरक्षक

श्री एस. नारायणन, आई.एफ.एस.
महानिदेशक उच्चतर शिक्षा, हरियाणा

संरक्षक

प्रो. (डॉ.) सर्वजीत कौर

जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी, यमुनानगर एवं प्राचार्या, राजकीय महाविद्यालय, अहङ्कारा (बिलासपुर)

संयोजक

डॉ. रमेश कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास

राजकीय महाविद्यालय, अहङ्कारा (बिलासपुर)

समन्वयक

डॉ. सुमन पंजेटा
श्री करण सिंह
श्री अमरपाल
श्री अमित कुमार

सह-संयोजक

श्रीमति आरती अरोड़ा
डॉ. अमित कपूर
श्रीमति अनीता

आयोजन सचिव

डॉ. मनोज
श्रीमति चंचल रानी
श्री मोहिंदर
डॉ बलबीर कुमार

आयोजन समिति

श्रीमति महक सिंगला, डॉ. नंदिनी मौदगिल, श्री मंगला सिंह
डॉ. सतनाम सिंह, डॉ. अजय रतन, डॉ. ममता मग्गो
श्रीमति मिनाक्षी, सुश्री निशा, श्रीमति अनुकृति, श्रीमति पूजा शर्मा

संगोष्ठी सलाहकार बोर्ड

प्रोफेसर (डॉ.) अजीत सिंह, संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा विभाग, हरियाणा, पंचकुला

लेफ्टिनेंट (डॉ.) वीरेंद्र पाल, रजिस्ट्रार, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

श्रीमति सुमन भाटिया, प्राचार्या, राजकीय महाविद्यालय, सरस्वती नगर

प्रोफेसर (डॉ.) सुनील तनेजा, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, छछरौली, यमुनानगर

श्री सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राचार्य, ज्योतिबा फुले राजकीय महाविद्यालय, रादौर

प्रोफेसर (डॉ.) संजीव कुमार, प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, प्रताप नगर

डॉ. गगनदीप कौर, प्राचार्या, राजकीय महाविद्यालय, पलवल, कुरुक्षेत्र

डॉ. अंकेश्वर प्रकाश, परीक्षा नियंत्रक, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

डॉ. अनिल धवन, प्राचार्य एम.एल.एन. कॉलेज, यमुनानगर

डॉ. अरविंदर सिंह भल्ला, प्राचार्य, जी.एन.के. कॉलेज, यमुनानगर

डॉ. करुणा, प्राचार्या, महाराजा अग्रसेन महाविद्यालय, जगाधरी

डॉ. सुरिंदर कौर, प्राचार्या, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गल्स, यमुनानगर

डॉ. सुखविंदर कौर, प्राचार्या, जी.एन.जी. कॉलेज, यमुनानगर

डॉ. मोनिका खुराना, प्राचार्या, हिंदू गल्स कॉलेज, जगाधरी

डॉ. ममता शर्मा, प्राचार्या, गुर्जर कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देवधर, यमुनानगर

डॉ. राजेंद्र रंगा, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, ज्योतिबा फुले राजकीय महाविद्यालय, रादौर

डॉ. अतुल यादव, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, राजकीय महाविद्यालय, अम्बाला कैंट

डॉ. अनुराग, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, गुरु नानक खालसा कॉलेज, यमुना नगर

डॉ. श्री प्रकाश, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग, एमएलएन कॉलेज, यमुना नगर

डॉ. गुरमेज, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, डी.ए.टी. कॉलेज, साढ़ौरा

डॉ. शबनम, विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, गुरु नानक गल्स कॉलेज, यमुनानगर

डॉ. अमनदीप मक्कड़, एसोसिएट प्रोफेसर, आर्य गल्स कॉलेज, अंबाला कैंट

डॉ. सोनिया शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदू गल्स कॉलेज, जगाधरी

डॉ. प्रतिभा, देवीलाल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, बुढ़िया, जगाधरी

अधिक जानकारी के लिए, संपर्क करें: डॉ. रमेश कुमार (8168342450), डॉ. अमित कपूर (9896087806)